सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 151

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 35-36
नवम्बर – 2016

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

'आरती साधना' – 'अर्थ'

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधुभगिनियों से

वंदनीय दादाजी ने कहा था, ईश्वरी कृपा प्राप्ति होने के अनेक साधन होम–हवन, व्रतवैकल्य, उपवास, आदि इस प्रकार के सभी साधनों में श्रेश्ठ साधन है, 'आरती' ।

वंदनीय दादाजी ने अपने इस संद्धि कार्यपद्धति में 'आरती' गोरक्षनाथजी के (नाथपरंपरा के) विमोचन एवं दीक्षाओं आदि को अंतर्भूत कर 'आरती' को 'आरती साधना' में स्थित्यंतरीत किया।

आरती साधना के प्रमुख तीन अंग है। पहला अंग इस आरती में जो शब्द है, वह। दूसरा अंग यानी इस आरती का संगीत (स्वर, ताल, लय) और तीसरा अंग है आरती गाने वाले की 'आर्तता' । 'आर्तता' इस शब्द से आरती शब्द आया है। आर्तता याने आर्त भाव यानी इस माध्यम के भाव, जो कि भावातीत अवस्था का अनुभव देते है। जिसमें से ईश्वर प्रेम या गुरु प्रेम व्यक्त होता है। आर्तता यानी वह भावना, जो गाने वाला व्यक्त करता है जब उसे लगता है कि जिस गुरुने इस पर अनंत प्रकार के विचार किए है, ऐसे गुरु का एक बार दर्शन हो यह सोचकर जब आरती गाई जाती है तब आर्तता महसूस होती है। यह आर्तता माध्यम के आत्मिक विकास की साक्ष देती है।

वं. दादाजी ने इन आरतियों के अलग अलग सेट करके आखिर के बारह साल से भी ज्यादा समय उन आरतियों को उसी प्रकार गाया, जिससे उन आरतियों में उनकी लय–ताल में गुरुशक्ति सिद्ध करके दी है। यह सेट इस प्रकार किए गए है, जिससे सभी मानवों को (कफ, पित्त, वात, प्रवृत्ती, अनुसार) समान लाभ हो और सबका यथोचित विकास सम्पन्न हो। इन आरतियों के संगीत से अलग ही स्पंदन निर्माण होते हैं, जो हमें हमारे विचार–अविचार, दुख भुलाकर

समाधान अवस्था का अनुभव देते हैं।

आरती साधना का पहला महत्वपूर्ण अंग यानी 'शब्द', यानी आरती का अर्थ। जब हम किसी भी शब्द का उच्चार करते है, तब इस शब्द के पाँच अर्थ होते है। किसी भी शब्द की पाँच अवस्थाऐं इस प्रकार है,

1. अव्यक्त अवस्था – शब्द का उच्चार करने से पहले जो विचार हमारे मन में होता है, वह अर्थ यानी शब्द का पहली अवस्था – अव्यक्त अवस्था।
2. शब्द– जिसका उच्चार किया जाता है।
3. शब्दार्थ – उच्चार किया हुआ शब्द जब स्थूल बुद्धि को जो अर्थ बताता है वह प्राथमिक अर्थ यानी शब्दार्थ।
4. मतितार्थ – यानी उस शब्द के अंदर जो अर्थ छुपा होता है जो कि विचार करने के बाद हमें ज्ञात होता है वह 'मति' यानी बुद्धि यानी सूक्ष्म बुद्धि, सूक्ष्म मन, स्थूल बुद्धि एवं स्थूल मन इन चार अवस्थाओं के विकसित होने पर ज्ञात होता है मतितार्थ।
5. गूढ़ार्थ – यानी जो गूढ (छुपा हुआ) अर्थ उस शब्द में होता है वह। साधु–संत जो उच्चार करते हैं उसका अर्थ हमें कई साल बाद समझ में आता है, उसका अनुभव आता है शब्द का 'गुढ़ार्थ है।

किसी भी शब्द के पीछे पाँच अर्थ होते हैं, तो जो अक्षरब्रह्म और शब्दब्रह्म की आरतियाँ है उनके अर्थ कितने और क्या क्या होंगे? वं. दादाजी ने एक बार कहा था कि आरती साधना का लाभ मराठी लोगों से ज्यादा बाकी लोगों को (छवद.डींतींजतंपंद) होता है। क्योंकि मराठी लोग आरती का शाब्दिक अर्थ समझ कर गाते हैं, जब गलत भाव निर्माण होते है, गलत मतलब निकलता है तो उस आरती साधना का लाभ कम होता है और जिनको आरती का अर्थ नहीं पता लेकिन वे उस आरती के स्पंद, उसका संगीत, शब्दब्रह्म अनुभव करके आरती का अधिक लाभ लेते हैं। लेकिन उस आरती का पारमार्थिक अर्थ समझकर उसका लाभ और भी अधिक हो जाता है, जिससे भाव–भावातीत–रंगातीत अवस्था का अनुभव आता है। आरती यह एक साधना है क्योंकि यह आरतियाँ ईश्वर को या श्री गुरु को खुश करने के लिए नहीं बल्कि अपना विकास करने के लिए वं. दादाजी ने सिद्ध की है। जिस प्रकार हमारे माध्यम का विकास होता जायेगा उस प्रकार उसी आरती का अलग अर्थ हमें ज्ञात होता जायेगा। ऊपर जो Maharashtrian और Non- Maharashtrian लोगों के विचारों के बारे में लिखा है, उसका उदाहरण वं. दादाजी ने दिया था कि, जब हम आरती गाते है – ''काय अपराध माझा न भेट सी दत्ता'' तब उसका अर्थ क्या समझते है। तब एक भक्त ने कहा कि हम सोचते है कि, 'हम हमारी तरफ से साधना, पूजा–अर्चा आदि जो करते है उसमें क्या कमी है, या हमारी क्या गलती है जिसकी वजह से हमें दत्त भगवान नहीं मिल रहे हैं?' यह इस आरती का शाब्दिक अर्थ है। तब वं. दादाजी ने कहा कि यानी अभी भी तुम ईश्वर को दोष दे रहे हो कि सभी साधन–सेवा करने के बाद भी वे तुम्हें नहीं मिल रहे है। लेकिन असली माईने में यह आरती के लफ्ज़ तुम्हारे लफ्ज़ नहीं तो मेरे लफ्ज़ हैं। जैसे यह मेरी तकलीफ है कि मैंने अपने संसार का विचार न करते हुए, त्याग और कठिन तपस्या, साधना करके दिव्य पुण्य विभूतियों के आशीर्वाद से यह गुरुमार्ग की परंपरा आगे बढ़ाई, जिससे आप भक्त भाविक अपना विकास आसानी से प्राप्त कर पाये और ऐसा सूक्ष्म साधन आपकी झोली में डाला, इसमें क्या कमी रह गई या मेरी क्या गलती हो गई कि अभी भी आप भक्त दत्त भगवान को यानी गुरुशक्ति को नहीं मिल रहे हो, गुरुशक्ति

से एकरूप नहीं हो रहे हो। यानी आरती के शाब्दिक अर्थ से हम ईश्वर की गलती निकालकर उससे नाराज हो रहे है, जबकि असली अर्थ बिल्कुल उल्टा है। आगे जाकर यह अर्थ दत्त अवस्था यानी तीन स्थिति एकरूप होना यानी अपना काया–वाचा–मन एकरूप होना यह अर्थ बताता है। यानी 'न भेटसी दत्ता' यानी विमोचन, दीक्षा, साधना आदि सिद्धताओं का लाभ लेने के बावजूद भी हम अपना विचार दृढ़ क्यों नहीं कर पा रहे हैं?हमारा काया–वाचा–मन एकरूप क्यों नहीं हो पा रहा है? यह सवाल वं. दादाजी इस आरती के माध्यम से हमें कर रहे है। यह सोचकर खुदकी गलती मानकर खुदका विकास करने का प्रयत्न करना यानी आरती का प्राथमिक पारमार्थिक अर्थ समझना।

इसी प्रकार कभी–कभी शाब्दिक अर्थ गलत अर्थ बताते है, जब उसी आरती के अनेक अर्थ हो सकते हैं। आरतियों के प्राथमिक पारमार्थिक अर्थ समझकर हमें वह आरती गाते समय आनंद प्राप्त कर देगा, इसी उद्देश्य से आरतियों के अर्थ का अध्ययन हम करेंगे। यह अर्थ वं. दादाजी की मुलाकातों से या अन्य सेवकों के माध्यम से भी बताये गए है। इसमें हम शब्द का अर्थ और उसके पारमार्थिक प्राथमिक अर्थ का अध्ययन करेंगे। जैसे जैसे अपना विकास होता जायेगा। वैसे–वैसे उसका गूढ़ अर्थ (Deeper Meaning) हमें समझ में आयेगी। वं. दादाजी और प.पू. बाबा की कृपा से इन आरतियों के अर्थ से हमें आरती गाते समय गुरुकृपा का लाभ होकर भावातीत अवस्था के आनंद का अनुभव हो, यही उनके चरणों में प्रार्थना।

'हृदत्कमलकर्णिके माजी सद्गुरु बैसविला'

शाब्दिक अर्थ– मेरे हृदय स्थान में सद्गुरु बिठाया है।

प्राथमिक पारमार्थिक अर्थ– हमारे शरीर में जो अवयव एक तरफ है वही अवयव दूसरी तरफ है लेकिन सबसे महत्वपूर्ण अवयव, जिसकी वजह से हम जिंदा रहते है वह हमारी बायीं तरफ छाती के पिंजरे में दिया है। उसका दूसरा भाग हमारे दायीं तरफ हर एक मानव को ईश्वर सेवा करके आत्मिक शक्ति का हृदय बनाना होता है, जोकि ईश्वर का या श्री गुरु का स्थान है। हम इस गुरुमार्ग में हमारी तकलीफों के कारण, सुख प्राप्ति करने के लिए आए लेकिन श्री गुरु ने कृपावंत होकर हमें सुख–शांति–समाधान तो प्राप्त करके दिया ही लेकिन उसी के साथ हमारे 3 माध्यमों में आत्मिक शक्ति का हृदय निर्माण करके श्री सद्गुरु नामःस्मरण से गुरुशक्ति को वहा अधिष्ठित किया। इसी वजह से हम इस मार्ग में हमेशा के लिए जुड़ गए। हमें आज भी इसका ज्ञान नहीं है क्योंकि हमने इसके लिए कोई प्रयत्न नहीं किए। अब हमें भी उसकी पहचान करनी है और हमारे अंदर जो गुरुशक्ति का बीज बोया है उसको हृदय स्थान में अधिष्ठित करने के लिए सिंहासन बनाना है, जिसके चार पाँव यानी श्रद्धा, सबुरी, सेवा और साधना।

'प्रेमानंदे तो पुजिला सद्गुरु बैसविला'

जो सद्गुरु हमारे अंदर श्री गुरु ने बिठाया है उसका पूजन करने के लिए फूल, हार आदि औपचार नहीं चाहिए तो जब हम अपने आसपास के लोगों से प्रेम से और आनंद से बर्ताव करेंगे तब उनका पूजन होगा।

'अहंपणाचे अर्घ्य देता अधिष्ठानी शोभला, भावातीत गुरु लाभला।'

जब हम अपना अहंभाव त्याग देंगे, उसकी आहूति दे देंगे, मैं, मेरा, यह मैंने किया, मेरी वजह से हुआ, आदि बोलना एवं सोचना छोड़ देंगे तब वे सद्गुरु अपने आप ही अपने मैं की जगह हमारे हृदय स्थान में अधिष्ठित होकर हमारे देह को शोभा देंगे (आत्मिक तत्व से खूबसूरत करेंगे)। तब हमारी भाव

अवस्था का स्थित्यंतर भावातीत अवस्था में हो जायेगा यानी अभी भाव अवस्था में हमारा श्री गुरु पर पूरा विश्वास है और इसके आगे भावातीत आने लगेगा यानी गुरुका लाभ होगा, गुरु की प्राप्ति होगी।

'प्रेमामृताचे स्नान धालिता आत बाहेर भिजला भक्त भजनी प्रेमे सजला।'

शाब्दिक अर्थ – प्रेमरूपी अमृत से स्नान करने पर वह अंदर से और बाहर से भीग गया, भक्त भजन में प्रेम से सज गया।

प्राथमिक अर्थ – श्री गुरु भक्त को या सेवक को जब भावातीत अवस्था का अनुभव देता है तब वह सद्‌गुरु का अधिष्ठान मजबूत होने लगता है और गुरुशक्ति से और गुरुप्रेम से सद्‌गुरु उस भक्त को स्नान कराते है, जिससे उस भक्त की अदंर की माध्य में गुरुशक्ति से भीग जाती है यानी विकसित होने लगती है और बाहर से भी उस सेवक के आचार–विचार–उच्चार से गुरु प्रेम बरसने लगता है। तब वह भक्त सेवक अवस्था प्राप्त कर असली माईने में भजन यानी जनो को भजना यानी अपने आस पास, अपना परिवार, अपना संसार यानी पूरे जगत की प्रेम से सेवा करने के लिए तत्पर होता है तभी श्री सद्‌गुरु उस माध्यम में गुरु प्रेम से, गुरुकृपा से सज जाते हैं।

'आत्मार्पण नैवेद्या ने दत्त तृप्त जाहला, नित्य भजनी डुलू लागला।'

जब साधक के 19 माध्यम गुरुशक्ति युक्त हो जाते है तब न कोई अहंभाव है न कोई दूजाभाव होता है। यानी गुरु और भक्त एक हो जाते है। श्री सद्‌गुरु पूरी तरह भक्त के हृदय स्थान में स्थित हो जाते है तब सद्‌गुरु को वह भक्त अपना सर्वस्व अर्पण कर खुद के आत्म तत्व का नैवेद्य चढ़ाता है। यानी उस जीव का विकास जीवात्मा–आत्मा–परमात्मा तक पहुँच जाता है तब दत्त तृप्त जाहला यानी श्री गुरु की तृप्ती हो गई क्योंकि ऐहिक माँगने आया हुआ भक्त साधक और सिद्ध अवस्था तक पहुँच गया।

अब 'नित्य भजनी डुलू लागला। याने हमेशा भजन करने में खुश रहने लगा, रममाण हो गया। हमेशा यानी जनम–जनम तक अब यह साधक–सिद्ध, जनों को भजनों में ही यानी लोगों की सेवा करने में ही खुश रहेगा। अगले अनेक जनम गुरुकार्य में व्यतीत करेगा।

ऐसी कृपा वं. दादाजी ने हम पर करके हमारे हृदय स्थान में श्री सद्‌गुरु को बिठाया है।

।। शुभ भवतु।।

एक तुच्छ जन्म जन्म का सेवक,
श्री साईकल्प अध्यात्म संस्था

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible